Series SOS

Code No. **29/1**
कोड नं.

Roll No.
रोल नं.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **7** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)
HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*
Time allowed : 3 hours *Maximum Marks : 100*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

साधारणतः सत्य का अर्थ सच बोलना मात्र ही समझा जाता है, परन्तु गांधीजी ने व्यापक अर्थ में 'सत्य' शब्द का प्रयोग किया है । विचार में, वाणी में और आचार में उसका होना ही सत्य माना है । उनके विचार में जो सत्य को इस विशाल अर्थ में समझ ले उसके लिए जगत् में और कुछ जानना शेष नहीं रहता । परन्तु इस सत्य को पाया कैसे जाए ? गांधीजी ने इस सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं — एक के लिए जो सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है । इसमें घबराने की बात नहीं है । जहाँ शुद्ध प्रयत्न है वहाँ भिन्न जान पड़ने वाले सब सत्य एक ही पेड़ के असंख्य भिन्न दिखाई देने वाले पत्तों के समान हैं । परमेश्वर ही क्या हर आदमी को भिन्न दिखाई नहीं देता ? फिर भी हम

जानते हैं कि वह एक ही है । पर सत्य नाम ही परमेश्वर का है, अतः जिसे जो सत्य लगे तदनुसार वह बरते तो उसमें दोष नहीं । इतना ही नहीं, बल्कि वही कर्तव्य है । फिर उसमें भूल होगी भी तो सुधर जाएगी, क्योंकि सत्य की खोज के साथ तपश्चर्या होती है अर्थात् आत्मकष्ट-सहन की बात होती है, उसके पीछे मर मिटना होता है, अतः उसमें स्वार्थ की तो गंध तक भी नहीं होती । ऐसी निःस्वार्थ खोज में लगा हुआ आज तक कोई अंत पर्यन्त ग़लत रास्ते पर नहीं गया । भटकते ही वह ठोकर खाता है और सीधे रास्ते पर चलने लगता है ।

ऐसे ही अहिंसा वह स्थूल वस्तु नहीं है जो आज हमारी दृष्टि के सामने है । किसी को न मारना, इतना तो है ही । कुविचार मात्र हिंसा है, उतावली हिंसा है । मिथ्या भाषण हिंसा है । द्वेष हिंसा है । किसी का बुरा चाहना हिंसा है । जगत् के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्ज़ा रखना भी हिंसा है ।

इतना हमें समझ लेना चाहिए कि अहिंसा के बिना सत्य की खोज असम्भव है । अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख़ । इसमें किसे उलटा कहें किसे सीधा । फिर भी अहिंसा को साधन और सत्य को साध्य मानना चाहिए । साधन अपने हाथ की बात है । हमारे मार्ग में चाहे जो भी संकट आए, चाहे जितनी हार होती दिखाई दे — हमें विश्वास रखना चाहिए कि जो सत्य है वही एक परमेश्वर है । जिसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग है और एक ही साधन है — वह है अहिंसा, उसे कभी न छोड़ेंगे ।

(क) गांधीजी के अनुसार सत्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । *2*

(ख) जो एक के लिए सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है । इस बात को गांधीजी ने कैसे समझाया है ? *2*

(ग) गांधीजी ने किन बातों एवं व्यवहारों को हिंसा माना है ? *2*

(घ) सत्य की खोज में लगा हुआ व्यक्ति ग़लत रास्ते पर क्यों नहीं जा सकता ? *2*

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए : *2*
"अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख़ ।"

(च) अहिंसा सत्य की प्राप्ति में साधन कैसे है ? *2*

(छ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक बताइए । *1*

(ज) उतावली हिंसा है । मिथ्या भाषण हिंसा है । द्वेष हिंसा है ।
उपर्युक्त वाक्यों को एक सरल वाक्य में बदलिए । *1*

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए — निःस्वार्थ, व्यापक । *1*

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1×5=5*

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन ।
हैं बँधे नर के करों में वारि, विद्युत्, भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप ।
है नहीं बाक़ी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित्, गिरि, सिंधु एक समान ।

शीश पर आदेश कर अवधार्य,
प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य;
मानते हैं हुक्म मानव का महा वरुणेश,
और करता शब्दगुण अंबर वहन संदेश ।
नव्य नर की मुष्टि में विकराल,
हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण विकराल ।

यह प्रगति निस्सीम ! नर का यह अपूर्व विकास !
चरण-तल भूगोल ! मुट्ठी में निखिल आकाश !
किन्तु, है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,
छूट कर पीछे गया है रह हृदय का देश;
मोम-सी कोई मुलायम चीज़
ताप पाकर जो उठे मन में पसीज-पसीज ।

(क) आधुनिक युग को कवि ने विचित्र और नवीन क्यों कहा है ?

(ख) 'कहीं कोई रुकावट शेष नहीं रही' — इसकी पुष्टि में कवि ने क्या तर्क दिया है ?

(ग) मानव द्वारा की गई वैज्ञानिक प्रगति के अद्भुत विकास को देखकर भी कवि संतुष्ट क्यों नहीं है ?

(घ) 'प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य' — प्रमाण में एक उदाहरण दीजिए ।

(ङ) मन में रहने वाली 'मोम-सी कोई मुलायम चीज़' क्या हो सकती है ? उसका अभाव क्यों दिखाई पड़ता है ?

अथवा

हम प्रचंड की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल ।
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर, अचल ।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं ।
हम हैं शांति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं ।
वीरप्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं ।
गंगा, यमुना, हिंद महासागर के हम ही रखवाले हैं ।
तन-मन-धन तुम पर कुर्बान,
जियो, जियो जय हिन्दुस्तान !
हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण ।
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन ।
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल ।
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल ।
थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर ।
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर ।
हम उन वीरों की संतान,
जियो, जियो जय हिन्दुस्तान ।

(क) कविता में 'हम' के रूप में कौन अपना परिचय दे रहे हैं ? वे अपने आपको 'नई किरण' क्यों कह रहे हैं ?

(ख) भारतीय अपना सर्वस्व किस पर न्योछावर करना चाहते हैं और क्यों ?

(ग) 'वीरप्रसू' किसे कहा गया है और क्यों ?

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए —
'जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन'

(ङ) काव्यांश के आधार पर हमारे पूर्वजों के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

खण्ड ख

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी ***एक*** पर निबन्ध लिखिए : *10*

(क) खेल-जगत् में भारत की उपलब्धियाँ

(ख) भारत का प्राकृतिक सौंदर्य

(ग) पुस्तकालय

(घ) टूटता संयुक्त परिवार

4. यातायात-व्यवस्था को सुधारने के अभियान में आप ग्रीष्मावकाश में अपनी सेवाएँ अर्पित करना चाहते हैं । इस आशय का पत्र पुलिस-अधीक्षक, यातायात को लिखकर सूचित कीजिए । 5

अथवा

खाद्य पदार्थों में मिलावट की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । इसके निराकरण के कुछ उपाय भी सुझाइए ।

5. हमारे दैनिक जीवन में मुद्रित माध्यमों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए उनकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 5

अथवा

रेडियो के लिए समाचार-लेखन में क्या-क्या सावधानियाँ अपेक्षित हैं ? विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए : 1×5=5

(क) समाचार-लेखन के 'छह ककार' कौन से हैं ?

(ख) समाचार किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

(ग) स्तम्भ-लेखन क्या होता है ? समझाइए ।

(घ) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे दिया जाता है ?

(ङ) उलटा पिरामिड-शैली से क्या तात्पर्य है ?

खण्ड ग

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

रैनि अकेलि साथ नहिं सखी । कैसें जिऔं बिछोही पँखी ॥
बिरह सैचान भँवै तन चाँड़ा । जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा ॥
रक्त ढरा माँसू गरा; हाड़ भए सब संख ।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख ॥

अथवा

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है

सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब-सी नमी है
और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरों का निचाट ख़ालीपन ।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***दो*** के उत्तर दीजिए : *3+3=6*

(क) सत्य की पहचान हम कैसे करें ? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

(ख) 'दीप अकेला' कविता में "यह अद्वितीय — यह मेरा – यह मैं स्वयं विसर्जित —" पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए ।

(ग) "मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ" कहकर भरत राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रहे हैं ?

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं ***दो*** का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए : *3+3=6*

(क) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी ।
निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जग जीव जतीन की छूटी चटी ।।

(ख) हेम-कुंभ ले उषा सवेरे – भरती ढुलकाती सुख मेरे ।
मदिर ऊँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा ।।

(ग) भर गया है ज़हर से
संसार जैसे हार खाकर,
देखते हैं लोग लोगों को,
सही परिचय न पाकर,
बुझ गई है लौ पृथा की,
जल उठी फिर सींचने को ।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *6*

स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह नहीं है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पश्चिम की देखादेखी और नक़ल में योजनाएँ बनाते समय प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच का नाज़ुक सन्तुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है — इस ओर हमारे पश्चिम-शिक्षित सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया । हम बिना पश्चिम को मॉडल बनाए, अपनी शर्तों और मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं, कभी इसका ख़याल भी हमारे शासकों को आया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता ।

अथवा

अभी भी मानव-सम्बन्धों के पिंजड़े में भारतीय जीवन-विहग बंदी है । मुक्त गगन में उड़ान भरने के लिए वह व्याकुल है । लेकिन आज भारतीय जन-जीवन संगठित प्रहार करके एक के बाद एक पिंजड़े की तीलियाँ तोड़ रहा है । धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले उन्हें मज़बूत कर रहे हैं, जो भारतभूमि में जन्म लेकर और साहित्यकार होने का दंभ करके मानव-मुक्ति के गीत गाकर भारतीय जन को पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते हैं ।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***दो*** के उत्तर दीजिए : *4+4=8*

(क) "मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है; इधर बाँधो, उधर लग जाती है ।" कथन के आधार पर 'दूसरा देवदास' और पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए ।

(ख) 'शेर' कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए ।

(ग) फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने "बड़ी बहुरिया की पीड़ा को, उसके भीतर के हाहाकार को संवदिया के माध्यम से अपनी पूरी सहानुभूति प्रदान की है ।" कथन के आलोक में बड़ी बहुरिया का चरित्रांकन कीजिए ।

12. विद्यापति **अथवा** रघुवीर सहाय के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए । *6*

अथवा

रामचन्द्र शुक्ल **अथवा** भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए ।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***तीन*** के उत्तर दीजिए : *3+3+3=9*

(क) 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते हैं', कैसे ? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(ख) सब जगह लगी बरसात की झड़ी का मालवा के जन-जीवन पर क्या असर पड़ता है ?

(ग) भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई ?

(घ) रूपसिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूपसिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया ? 'आरोहण' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

14. 'आरोहण' कहानी के आधार पर भूप दादा के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि उनके जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है । *6*

अथवा

'तो हम भी सौ लाख बार कमाएँगे' — इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए ।